

---

# Shri Yamunashtakam

---

## श्रीयमुनाष्टकम्

---

### Document Information

---

Text title : yamunAShTakam 10

File name : yamunAShTakam10.itx

Category : devii, krishna, rUpagovsAmin, stavamALA, aShTaka, nadI, devI

Location : doc\_devii

Author : Rupagoswami

Transliterated by : Jan Brzezinski (Jagadananda Das) jankbrz at yahoo.com and Neal Delmonico (Nitai Das) ndelmonico at sbcglobal.net

Description/comments : From stavamALA (rUpagovsAmivirachita) Garland of Devotional Prayers stavamALA

Acknowledge-Permission: <http://granthamandira.net> Gaudiya Grantha Mandira

Latest update : February 22, 2019

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीयमुनाष्टकम्



भ्रातुरन्तकस्य पत्तनेऽभिपत्तिहारिणी  
प्रेक्षयातिपापिनोऽपि पापसिन्धुतारिणी ।  
नीरमाधुरीभिरप्यशेषचित्तबन्धिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ १ ॥

हारिवारिधारयाभिमण्डितोरुखाण्डवा  
पुण्डरीकमण्डलोद्यदण्डजालिताण्डवा ।  
स्नानकामपामरोग्रपापसम्पदन्धिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ २ ॥

शीकराभिमृष्टजन्तुदुर्विपाकमर्दिनी  
नन्दनन्दनान्तरङ्गभक्तिपूरवर्धिनी ।  
तीरसङ्गमाभिलाषिमङ्गलानुबन्धिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ३ ॥

द्वीपचक्रवालजुष्टसप्तसिन्धुभेदिनी  
श्रीमुकुन्दनिर्मितोरुदिव्यकेलिवेदिनी ।  
कान्तिकन्दलीभिरिन्द्रनीलवृन्दनिन्दिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ४ ॥

माथुरेण मण्डलेन चारुणाभिमण्डिता  
प्रेमनद्धवैष्णवाध्ववर्धनाय पण्डिता ।  
ऊर्मिदोर्विलासपद्मनाभपादवन्दिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ५ ॥

रम्यतीररम्भमाणगोकदम्बभूषिता  
दिव्यगन्धभाक्कदम्बपुष्पराजिरूषिता ।  
नन्दसूनुभक्तसङ्घसङ्गमाभिनन्दिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ६ ॥

फुल्लपक्षमल्लिकाक्षहंसलक्षकूजिता  
भक्तिविद्धदेवसिद्धकिन्नरालिपूजिता ।  
तीरगन्धवाहगन्धजन्मबन्धरन्धिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ७ ॥

चिद्विलासवारिपूरभूर्भुवःस्वरापिनी  
कीर्तितापि दुर्मदोरुपापमर्मतापिनी ।  
बल्लवेन्द्रनन्दनाङ्गरागभङ्गगन्धिनी  
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ८ ॥

तुष्टबुद्धिरष्टकेन निर्मलोर्मिचेष्टितां  
त्वामनेन भानुपुत्रि! सर्वदेववेष्टिताम् ।  
यःस्तवीति वर्धयस्व सर्वपापमोचने  
भक्तिपूरमस्य देवि! पुण्डरीकलोचने ॥ ९ ॥

इति श्रीरूपगोस्वामिविरचितस्तवमालायां श्रीयमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

—  
*Shri Yamunashtakam*

pdf was typeset on November 25, 2021

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

